www.sanskriti.edu.in

SANSKRITI SCHOOL OF TOURISM AND HOSPITALITY
1ST RANK IN UP BY

SANSKRITI UNIVERSITY AWARDED
STUDENT DIVERSITY & YOUNG UNIVERSITY IN INFRASTRUCTURE & RESEARCH

SANSKRITI UNIVERSITY
FOR EXCELLENCE IN LIFE

SANSKRITI UNIVERSITY
FOR EXCELLENCE IN LIFE

Established Under Section 2(f) of UGC Act, 1956

SANSKRITI SCHOOL OF ENGINEERING AND TECHNOLOGY
6TH RANK IN UP BY

SANSKRITI UNIVERSITY
RANKED AMONG TOP 15TH UNIVERSITIES IN INDIA BY INDIA TODAY ASPIRE

संस्कृति विवि ने लिया भारत को विश्वगुरु बनाने का संकल्प

जोश और जुनून के साथ मनाया 75वां स्वतंत्रता दिवस

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में 75वां स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूम–धाम और जोश के साथ मनाया गया। कैंपस के अधिकारियों, कर्मचारियों ने विश्वविद्यालय के मुख्य मैदान में ध्वजारोहण कर देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों को याद किया और भारत को विश्वगुरु बनाने का संकल्प लिया। तिरंगे के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करने के बाद सबने भारत माता और वंदेमातरम के नारों से सारे विवि के प्रांगण को गुंजित कर दिया। समारोह के दौरान संस्कृति विवि की एनसीसी विंग के कैडेट्स ने तिरंगे को परंपरागत तरीके से सलामी दी। इस मौके पर संस्कृति विवि के कुलपति डा. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि हमने पूरे वर्ष भारत की आजादी अमृत महोत्सव मनाया। विवि के विभिन्न विभागों ने सालभर आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के अभियान के तहत बड़े ही रुचिकर और देशभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रमों का आयोजन कर लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि देश को आगे ले जाने के संकल्प को पूरा करने की जिम्मेदारी हम शिक्षकों की ज्यादा बनती है। वैसे तो देश की तरक्की में हर वर्ग और समाज अपनी भूमिका निर्वाह कर रहा है लेकिन शिक्षकों की भूमिका बहुत अहम रहने वाली है। संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर के डीन डा. रजनीश त्यागी ने कहा कि भारत बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस गति को और तेज करने के लिए हमें जापान और इजराइल को अपना आदर्श बनाना होगा। जापान की तरह हमें हर तकनीक स्वयं खड़ी करनी होगी और स्वदेशी अपनाने की आदत डालनी होगी। इजराइल की तरह संघर्ष करने की आदत डालनी होगी और अपने लक्ष्य हासिल करने होंगे। संस्कृति नर्सिंग स्कूल के प्राचार्य डा. केके पाराशर ने बड़े जोश के साथ अपने संबोधन में देश के गद्दारों के खिलाफ कड़े रुख को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने नारा देते हुए कहा कि, इंकलाब का नारा हो, जय हिंद की बोली हो, जो भारत से करे गद्दारी उसके सीने में गोली हो। इस मौके पर संस्कृति विवि की ओएसडी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. सुजित के.दलाई, रजिस्ट्रार पूरन सिंह, डीन एकेडमिक डा. योगेश चंद्रा, सब रजिस्ट्रार रवि त्रिवेदी आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

संस्कृति विवि में स्वतंत्रता दिवस समारोह पर उपस्थित अधिकारियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को संबोधित करते कुलपति डा. तन्मय गोस्वामी।

संस्कृति विवि के 26 विद्यार्थियों का यझाकी इंडिया में हुआ प्लेसमेंट

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के 26 विद्यार्थियों को आटोमोबाइल इंडस्ट्री के लिए इलेक्ट्रानिक मैटेरियल बनाने वाली विख्यात कंपनी यझाकी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी ने अच्छे वेतनमान पर चयनित किया है। कंपनी ने आनलाइन चयन प्रक्रिया अपनाकर यह प्लेसमेंट किया है। यझाकी इंडिया कंपनी के एचआर विभाग के मीतेश ने बताया कि आनलाइन परीक्षा, टेलीफोनिक इंटरव्यू के द्वारा संस्कृति विवि के डिप्लोमा के 26 विद्यार्थियों का चयन किया गया है । कंपनी द्वारा चयनित छात्रों में अभिषेक, अमकेश कुमार, अंकित पाठक, चंदन कुमार, दीपक सैनी, दीपक सिंह,दिलीप शर्मा, घनश्याम, हंसराज, कपिल शर्मा, मानसिंह, मो. तारीक, मुकेश कुमार, नरेंद्र यादव, नीलेश यादव, रासबिहारी, रविकांत, संतोश, सौरव राज, शिवम पचौरी, सोनू, सोनू प्रजापति, सूरज सिंह, विष्णु, उज्ज्वल राज, विष्णु हैं। इन विद्यार्थियों ने आनलाइन तीन चरणों में हुई चयन प्रक्रिया में भाग लिया था। यझाकी इंडिया कंपनी के एचआर विभाग के मीतेश ने बताया कि कि कंपनी आटोमोबाइल इंडस्ट्री के लिए बड़े स्तर पर इलेक्ट्रानिक इक्विपमेंट बनाने के क्षेत्र में जाना पहचाना नाम है। कंपनी को अपने सभी ग्राहकों के बीच अच्छे काम के लिए जाना जाता है। कंपनी के एचआर ने जानकारी देते हुए बताया कि संस्कृति विवि के छात्रों ने चयन प्रक्रिया के दौरान अपनी योग्यता का बेहतरीन प्रदर्शन किया है। संस्कृति विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने इस मौके पर कहा कि विद्यार्थियों को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान की जा रही है। यही वजह है कि ये विद्यार्थी कंपनियों की आवश्यकताओं पर खरे उतर रहे हैं सभी चयनित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमारे विवि से निकलकर बड़ी–बड़ी कंपनियों में रोजगार पा रहे छात्र–छात्राएं विवि का नाम तो ऊंचा कर ही रहे हैं साथ ही कंपनियों को भी आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दे रहे हैं।

रोजगार पाने से अच्छा रोजगार देने वाला बनिए: राजपाल

संस्कृति विवि में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस पर आयोजित 'इंटरप्रिन्योरशिप अपोर्चुनिटी एंड स्टार्टअप' सेमिनार में मुख्य अतिथि प्रिंसिपल डाइरेक्टर एमएसएमई आगरा सचिन राजपाल ने विद्यार्थियों को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि रोजगार तलाशने से ज्यादा रोजगार देने वाला बनने के प्रयास करिए क्योंकि किसी भी देश के विकास में उद्यमियों का बड़ा योगदान होता है। उन्होंने कहा कि आज सरकार नए उद्यमियों को आगे बढ़ाने के लिए हर तरह का सहयोग करना चाहती है, यही वजह कि नए उद्यमियों को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए अनेक योजनाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं का लाभ उठाकर विद्यार्थी अपना स्वयं का उद्योग खड़ा कर सकते हैं और सफल भी हो सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को एमएसएमई योजनाओं से धन लेने के विभिन्न तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी । उन्होंने एक अच्छा उद्यमी बनने के लिए किन–किन गुणों की आवश्यकता होती है इसके बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यमों में एक उद्यमिता कैरियर शुरू करने के लिए विद्यार्थियों के अंदर लगन, लचीलापन अत्यंत आवश्यक गुण हैं। कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत सुश्री अनुजा गुप्ता ने स्वागत भाषण और मुख्य अतिथि सचिन राजपाल की उपलब्धियों के बारे में संक्षिप्त परिचय के साथ की। इसके बाद संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डॉ. तन्मय गोस्वामी ने सभी छात्रों को उद्यमिता और इसके लाभों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। अंत में प्रश्नोत्तर काल में विद्यार्थियों ने एमएसएमई के प्रिंसिपल डाइरेक्टर से अनेक सवाल पूछे। विद्यार्थियों के सवालों उन्होंने बड़ी गंभीरता के साथ सुना और एक–एक सवाल का बड़े विस्तार से और सतुष्टिजनक तरीके समाधान किया। वेबिनार में शामिल होने और सुनने के लिए सभी वक्ताओं और उपस्थित लोगों को डॉ आर्मिंदर कौर द्वारा दिए गए धन्यवाद के साथ वेबिनार का समापन हुआ। सेमिनार के कोर्डिनेटर विभागाध्यक्ष विंसेट बालू थे।

संस्कृति विवि और आईआईएमआर हैदराबाद के बीच हुआ एमओयू

मिलेट्स की खेती को मिलेगा नया आयाम

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय और आईसीएआर के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेट्स रिसर्च हैदराबाद के मध्य एक महत्वपूर्ण एमओयू हुआ है। हैदराबाद में एक संपन्न हुए इस द्विपक्षीय समझौते(एमओयू) पर संस्कृति विवि के चांसलर और आईसीएआर–आईआईएमआर हैदराबाद की निदेशक डा. सीवी रत्नावथी ने हस्ताक्षर कर मोहर लगाई। इस समझौते के बाद मिलेट्स(बाजरा, ज्वार, रागी, समा के चावल आदि) की खेती को नई दिशा मिलेगी। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर और आईसीएआर–आईआईएमआर मिलकर शोध और शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। विद्यार्थियों के हित में उठाया गया यह कदम विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित होगा ऐसा माना जा रहा है। बताते चलें कि संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर द्वारा आर्गेनिक खेती बढ़ावा देने के लिए शोध पर विशेष ध्यान दे रहा है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेट्स रिसर्च हैदराबाद इंडियन काउंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च की एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में मिलेट्स की खेती के लिए नई शोध कर किसानों के लिए नए रास्ते खोल रही है। समझौते के बाद संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर और आईसीएआर के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेट्स रिसर्च हैदराबाद के मध्य शिक्षार्थियों, शिक्षकों और ज्ञान का आदान प्रदान होगा जिसका लाभ कृषि के विद्यार्थियों के अलावा देश के किसानों को मिल सकेगा। समझौते के दौरान संस्कृति विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने कहा कि संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर का उद्देश्य भारतीय कृषि को लाभदायक और अत्याधुनिक बनाना है ताकि हमारे देश के किसान समृद्ध हो सकें। समझौते के दौरान संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर के डीन डा. रजनीश त्यागी, विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा भी मौजूद रहीं।

हैदराबाद में संपन्न हुए संस्कृति विवि और आईआईएमआर हैदराबाद की बीच एमओयू को संयुक्त रूप से प्रदर्शित करतीं आईआईएमआर हैदराबाद की निदेशक डा. सीवी रत्नावथी और संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता।

संस्कृति विवि के ने शैक्षणिक भ्रमण से ली एअर हेंडलिंग की जानकारी

बहादुर गढ़ स्थित कंपनी का किया दौरा

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के डिप्लोमा और इंजीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों के एक दल ने बहादुर गढ़ नोएडा स्थित ऐड्जटेक सिस्टम लिमिटेड कंपनी का शैक्षणिक दौरा कर एअर हेंडलिंग की बारीक जानकारियों को व्यवहारिक तौर पर जाना। विद्यार्थियों ने कंपनी के अधिकारियों से मशीनों के निर्माण और उनके कार्य करने के तरीकों के बारे में सवाल पूछ कर अपनी शंकाओं का समाधान किया। भ्रमण के दौरान कंपनी के अधिकारियों राजपाल, मनोज गांधी, अमित झा ने विद्यार्थियों को बताया कि कंपनी कैसे व्यावसायिक तरीके से किसी जगह की एअर हेंडलिंग करती है। उन्होंने बताया कि हेल्थकेयर के लिए, खाद्यपदार्थों के रखरखाव के अलावा अन्य स्थानों के लिए इंसुलेशन, डक्ट, प्लेट्स की डिजाइनिंग और कंस्ट्रक्शन किस तरह से किया जाता है। संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने इस सारे कार्य का बड़ी रुचि लेकर निरीक्षण किया और इंजीनियरों व मशीनों को काम करते देखा। छात्रों ने कंपनी के अधिकारियों से हर मशीन के बारे में, काम करने के तरीकों से अवगत होने के लिए अनेक सवाल भी पूछे। विद्यार्थियों के इस दल के साथ शैक्षणिक भ्रमण पर गए शिक्षक सुशील त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि विद्यार्थियों के इस दल में तृतीय वर्ष और फाइनल ईयर के विद्यार्थी शामिल हुए। भ्रमण के बाद विद्यार्थियों ने अपने अनुभव शिक्षकों के साथ साझा किये और इस भ्रमण से मिली व्यवहारिक जानकारियों के प्रति संतोष व्यक्त किया।

बहादुरगढ़ सिस्टम लि. कंपनी का भ्रमण करने पहुंचा संस्कृति विवि के विद्यार्थियों का दल कंपनी के अधिकारियों के साथ।

उच्च गुणवत्ता का बासमती पैदा करें, मिलेगी अच्छी कीमत

संस्कृति विवि में आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञों ने दीं महत्वपूर्ण जानकारियां

संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर द्वारा आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि डा. रीतेश शर्मा को स्मृति चिह्न प्रदान करते संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता।

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय और एग्रीकल्चर एंड प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्टस एक्सपोर्ट डवलपमेंट अथोर्टी ऑफ इंडिया (एपिडा) के सम्मलित सहयोग से संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर द्वारा आयोजित कार्यशाला में जिले के किसानों को बासमती की खेती और मार्केटिंग के बारे में उपयोगी जानकारी दी गईं। कार्यशाला में विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि वे कैसे अपनी बासमती की उम्दा पैदावार कर सकते हैं और कैसे उसे एक्सपोर्ट कर अधिक मूल्य अर्जित कर सकते हैं। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एपिडा के प्रिंसिपल साइंटिस्ट प्लांट ब्रीडिंग(बासमती एक्सपोर्ट डवलपमेंट फाउंडेशन एपीडा) डा.रीतेश शर्मा ने किसानों को बताया कि बासमती की खेती सिर्फ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में होती है। पाकिस्तान में सिर्फ 14 जिलों में पाकिस्तान की खेती होती जबकि हमारे यहां सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही 30 जिलों में इसकी खेती हो रही है। वैसे अपने देश के सात राज्यों में बासमती की खेती होती है। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद जरूरत के अनुपात में बासमती की खेती बहुत कम है। डा. रीतेश ने किसानों को बताया कि बासमती की फसल में कौन–कौन सी बीमारियां होती हैं, उन बीमारियों को कैसे पहचानेंगे और उनका सहजता से निदान कैसे करेंगे। उन्होंने कहा कि अधिकतर किसान जानकारी के अभाव में बिनी जरूरत के कीटनाशकों का प्रयोग कर उसे जहरीला बना देते है और फिर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उसकी कीमत नहीं मिलती या फिर वो बिकता नहीं। ऐसा सिर्फ जानकारी के अभाव में और हमारे यहां चलने वाली प्रतिद्वंद्विता के कारण हो रहा है। उन्होंने किसानों से कहा कि भले ही उत्पादन कम हो लेकिन जो भी हो वह उच्च गुणवत्ता का होगा तो उसकी कीमत भी अच्छी मिलेगी और बिकेगा भी आसानी से। उन्होंने कीटनाशकों के अनावश्यक प्रयोग से बचने को कहा और बताया कि वे कैसे एपिडा के माध्यम से अपने खाद्यान्न का निर्यात कर सकते हैं। कार्याशाला में मौजूद संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता ने कहा कि संस्कृति विवि की सोच है कि हम अपने आसपास के किसानों की खेती को उपयोगी और गुणवत्ता युक्त बनाने में मदद करें और उनको अपने खाद्यान्न की अच्छी कीमत दिलाने के कार्य में सहायक सिद्ध हों। इसी क्रम में यह कार्यशाला आयोजित की गई है। अपने विद्यार्थियों के साथ–साथ किसानों को भी जागरूक करने के लिए संस्कृति विवि पहले भी ऐसे आयोजन करता रहा है और आगे भी ऐसे आयोजन होते रहेंगे। विवि के चांसलर सचिन गुप्ता ने किसानों को संस्कृति आयुर्वेदिक अस्पताल, इन्क्युबेशन सेंटर, स्टार्टअप से संबंधित जानकारी देते हुए कहा कि हमारे किसान और उनके बच्चे इनका लाभ उठाएं और अपने जीवन को खुशहाल बनाएं। कृषि विज्ञान केंद्र मथुरा के एसोसिएट प्रोफेसर डा. विपिन ने किसानों को कीटनाशकों के प्रयोग से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां देते हुए उनके दुष्परिणामों से परिचित कराया। कार्याशाला में डा. एसके सचान पूर्व डाइरेक्टर एक्सटेंशन एंड एचओडी एंटोमोलाजी, सरदार वल्लभ भाई पटेल विवि मेरठ, कृषि विज्ञान केंद्र मथुरा के हेड प्रोफेसर डा. वाई के शर्मा ने भी किसानों को महत्वपूर्ण जानकारिया उपलब्ध कराईं। जिले के प्रगतिशील किसान सुधीर अग्रवाल ने किसानों को कार्यशाला की आवश्यकता और उसके होने वाले लाभों से परिचित कराया। कार्यशाला में मौजूद किसानों ने विशेषज्ञों से उनके सामने आने वाली समस्याओं को लेकर अनके सवाल पूछे जिनका विशेषज्ञों ने संतुष्टिपूर्ण समाधान किया। कार्यक्रम के अंत में संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर के डीन डा. रजनीश त्यागी ने आगंतुक अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

चावल की खेती में वृद्धि के लिए होंगे शोध और नए प्रयोग

संस्कृति विवि ने एक और सरकारी संस्थान से किया शैक्षणिक समझौता

हैदराबाद में संपन्न हुए संस्कृति विवि और आईआईआरआर हैदराबाद के बीच एमओयू को संयुक्त रूप से प्रदर्शित करते आईआईआरआर हैदराबाद के निदेशक डा. आरएम सुंदरम और संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता।

मथुरा। संस्कृति स्कूल आप एग्रीकल्चर को कृषि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में एक पूर्ण क्षमतावान केंद्र बनाने में जुटा संस्कृति विवि प्रशासन देश के चुनिंदा संस्थानों से लगातार समझौते कर रहा है। हाल ही में इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेट्स रिसर्च हैदराबाद के बाद इंडियन इंस्टीट्यूट आफ राइस रिसर्च हैदराबाद से संस्कृति विवि ने एक महत्वपूर्ण समझौता किया है। संस्कृति विश्वविद्यालय और आईसीएआर के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ राइस रिसर्च हैदराबाद के मध्य हुए इस द्विपक्षीय समझौते(एमओयू) पर संस्कृति विवि के चांसलर और आईसीएआर–आईआईआरआर हैदराबाद के निदेशक डा. आर.एम. सुंदरम ने हस्ताक्षर कर मोहर लगाई। इस समझौते के दौरान आईआईआरआर की ओर से सीनियर साइंटिस्ट डा. बी निर्मला, असिस्टेंट टीफ टेक्निकल आफीसर यू चौतन्य तथा संस्कृति विवि की ओर से स्कूल आफ एग्रीकल्चर के डीन डा. रजनीश त्यागी, ओएसडी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा भी मौजूद रहीं। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर और आईसीएआर–आईआईआरआर मिलकर शोध और शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। विद्यार्थियों के हित में उठाया गया यह कदम विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित होगा ऐसा माना जा रहा है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ राइस रिसर्च हैदराबाद इंडियन काउंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च की एक महत्वपूर्ण इकाई है और यहां राइस(चावल) के जेनेटिक और प्लांट की पैदावर, बायोटेक्नोलाजी, प्लांट पैथोलाजी, एंटोमोलाजी, प्लांट फिजियोजाजी, सीड टेक्नोलाजी, बायोकेमिस्ट्री, माइक्रोबाइलाजी, एग्रोनामी, सोइल साइंस, एग्रिल, इंजीनियरिंग इकोनामी और इसके विस्तार पर काम हो रहा है। चावल की खेती के लिए नई शोध कर किसानों के लिए नए रास्ते खोले जा रहे है। समझौते के बाद संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर और आईसीएआर के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ राइस रिसर्च हैदराबाद के मध्य शिक्षार्थियों, शिक्षकों और ज्ञान का आदान प्रदान होगा जिसका लाभ कृषि के विद्यार्थियों के अलावा देश के किसानों को मिल सकेगा। समझौते के दौरान संस्कृति विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने कहा कि संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर का उद्देश्य भारतीय कृषि को लाभदायक और अत्याधुनिक बनाना है ताकि हमारे देश के विद्यार्थी उन्नत और समृद्ध खेती कर सकें।

छात्रों को अपनी प्राचीन चिकित्सा के प्रति विश्वास करना होगा

संस्कृति विवि में आयोजित सेमिनार में बोले प्रो.श्रीनिवासन

संस्कृति विवि में मर्म चिकित्सा पर आयोजित सेमिनार में विवि के एक शिक्षक को स्पांडलाइटिस की पीड़ा से मुक्ति दिलाते प्रो.एवी श्रीनिवासन।

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में मर्म चिकित्सा के अंतर्गत 'इक्या इनिशियेटिव इन एनशिएंट हीलिंग' विषय को लेकर आयोजित एक महत्वपूर्ण सेमिनार में बंगलौर के श्री परिपूर्ण सनातन चौरीटेबल ट्रस्ट के फाउंडर प्रोफेसर (डा.) एवी श्रीनिवासन ने आयुर्वेद के छात्रों और शिक्षकों से कहा आह्वान किया कि पहले वे स्वयं अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धति पर विश्वास करें क्योंकि यह शत–प्रतिशत लाभकारी और प्राकृतिक है। उन्होंने कहा कि यह देखने में आ रहा है कि कुछ बच्चे आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज में सिर्फ इसलिए प्रवेश ले लेते हैं क्योंकि वे डाक्टर की डिग्री लेना चाहते हैं। ये बच्चे न तो ठीक से आयुर्वेद को पढ़ते हैं, न सीखना चाहते हैं। अभी तीन साल पहले तक जनमानस में भी जो ऐलोपैथी के प्रति विश्वास था वह आयुर्वेदिक चिकित्सा के प्रति नहीं देखा गया। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से आयुर्वेदिक चिकित्सा के क्षेत्र में जो काम हुआ है, कोरोना काल में जिसप्रकार से विश्वस्तर पर आयुर्वेदिक चिकित्सा, जिसमें योग भी शामिल का महत्व स्वीकारा गया है उसको देखते हुए कहा जा सकता है कि इस भारतीय चिकित्सा के प्रति लोगों के विश्वास में आशातीत वृद्धि होगी। उन्होंने बताया कि वे अबतक ऐसे सैंकड़ों मरीजों को असाध्य रोगों से मुक्ति दिला चुके हैं जिनको ऐलोपैथी के चिकित्सकों ने लाइलाज बताकर लौटा दिया था। प्रो. श्रीनिवासन ने कहा कि भारतीय प्राचीन चिकित्सा पद्धति में जो क्षमता है वो अन्य किसी चिकित्सा पद्धति में नहीं है। उन्होंने कहा कि लोग करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं अपने रोगों की चिकित्सा में और फिर भी उनका शरीर रोगग्रस्त रहता है, जबकि आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा चंद रुपयों में इन रोगों को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि हमारा नर्वस सिस्टम ही हमारा प्राण है, इसकी चिकित्सा ही मर्म चिकित्सा कहलाती है। संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता ने कहा कि संस्कृति आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज सही अर्थों में आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण करें और चिकित्सक बनें, इसके लिए हमने ऐसे आयुर्वेदिक शिक्षा के संस्थानों से एमओयू किए हैं, ताकि प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति को विश्वस्तर पर ले जाया जा सके। इससे पूर्व संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर के डीन डा. रजनीश त्यागी ने प्रो. श्रीनिवासन का परिचय देते हुए उनकी उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सेमिनार के दौरान ही प्रो. श्रीनिवासन ने स्पांडलाइटिस से पीड़ित संस्कृति विवि के एक शिक्षक को मर्म चिकित्सा देकर 10 मिनट में ही आराम दिलाकर सबको अचंभित कर दिया। अंत में संस्कृति आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. सुजित के.दलाई ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संस्कृति ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल की सदस्य अनुजा गुप्ता ने किया।

संस्कृति विवि सत्र 21–22 के 90 प्रतिशत बच्चों को मिली नौकरी

कुलपति गोस्वामी ने कहा हमारा लक्ष्य बड़ा है और उसे हम हासिल करेंगे

मथुरा। गत वर्षों में संस्कृति विश्वविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों के द्वारा की गई मेहनत रंग ला रही है। देश और विदेश की बड़ी–बड़ी कंपनियां लगातार विश्वविद्यालय में कैंपस प्लेसमेंट कर रही हैं। विश्वविद्यालय द्वारा दी जा रही उन्नत शिक्षा और विद्यार्थियों के अच्छे परिश्रम का ही यह फल है कि अब लगभग सभी बड़ी कंपनियां अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप संस्कृति विवि के विद्यार्थियों को प्राथमिकता के आधार पर आफर लेटर दे रही हैं। यही वजह है कि 2021–22 सत्र में 90 प्रतिशत विद्यार्थी नौकरी पा चुके हैं और अनेक विद्यार्थी अपना उद्यम शुरू करने के लिए विवि के सहयोग से अपने प्रयासों में जुट गए हैं।

संस्कृति विवि के कुलपति डा. तन्मय गोस्वामी ने बताया कि संस्कृति विवि ने एक उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थान के रूप में महज कुछ वर्षों में ही जो स्थान हासिल किया है वह वास्तव में एक उदाहरण बन गया है। उन्होंने इसका श्रेय विश्वविद्यालय के शिक्षकों और विवि प्रशासन को देते हुए कहा कि विवि प्रशासन ने विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं उपलब्ध कराकर शिक्षण के क्षेत्र में आने वाली अनेक बाधाओं को दूर किया है। उन्होंने कहा संस्कृति विवि के विद्यार्थियों के लिए अनुभवी और क्वालीफाइड फैकल्टी तो हैं ही साथ उच्च स्तरीय प्रयोग शालाएं, देश और विदेश के बड़े–बड़े संस्थान से समझौतों से उपलब्ध अंर्राष्ट्रीय स्तर का कौशल, विशेषज्ञ विद्वानों के व्याख्यान भी सहजता से मिल रहे हैं। और इस सबके अलावा पढ़ने के लिए सुंदर वातावरण, खेलने के लिए हर सुविधा विद्यार्थियों का समग्र विकास कर रही है।

संस्कृति विवि के कुलपति डा.तन्मय गोस्वामी

डा. गोस्वामी ने संस्कृति विवि के विद्यार्थियों के हुए प्लेसमेंट से संबंधित जानकारी देते हुए कहा कि हमारे विवि के विद्यार्थी एचसीएल, टीसीएस, विप्रो, एसेंचर, अपोलो हास्पिटल, बजाज मोटर, श्री सीमेंट, क्रीम बेल, पीवीआर, पेटीएम, आईटेनिक टेक्नोलॉजी, मार्क एक्जास्ट, स्क्वायर यार्ड, जस्ट डायल जैसी अनेक बड़ी कंपनियों में नौकरी पा चुके हैं और लगातार कंपनियों से उनको आफर लैटर मिल रहे हैं। कुछ दिनों पहले ही हमारे यहां के 10 विद्यार्थियों को एमकेडी कार्प साइंस कंपनी ने और पांच विद्यार्थियों को मार्क एक्जास्ट कंपनी ने आफर लैटर दिया है। बहुत सारी कंपनियों ने जिन्होंने कैंपस प्लेसमेंट से बच्चों को चयनित किया है उनके आफर लैटर अभी आने बाकी हैं। डा. गोस्वामी ने कहा कि विवि का लक्ष्य बड़ा है और अभी हमको बहुत परिश्रम करना है जिसके लिए हम सभी सम्मलित रूप से प्रयासरत हैं।

संस्कृति स्कूल आफ फार्मेसी के छात्रों का विशेषज्ञ ने बढ़ाया ज्ञान

वेबिनार

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के स्कूल आफ फार्मेसी द्वारा 'डाकिंग द लीड फाइंडर' विषय को लेकर आयोजित वेबिनार में मुख्य वक्ता सांथिरम कालेज आफ फार्मेसी नंदियाल, हैदराबाद में फार्मास्युटिकल एनालिसिस विभाग के प्रोफेसर डा. शिव शंकर रेड्डी.एल. प्रोफेसर ने वेबिनार में भाग ले रहे विद्यार्थियों और शिक्षकों को बताया कि डाकिंग एक मोलिक्यूलर तकनीकि है जिसका उपयोग प्रोटीन(एंजाइम) और छोटे अणुओं (लीगेण्ड्स) की आपस में प्रक्रिया करने के लिए किया जाता है। ज्यूम पर आयोजित इस वेबिनार के द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने और जागरूकता के लिए विशेषज्ञ वक्ता द्वारा अपने संबोधन में बताया गया कि मालिक्यूलर डाकिंग एक महत्वपूर्ण साधन है जिसके माध्यम से अथवा जिसके उपयोग से अणुजैविकी जीव विज्ञान और दवाओं के शोध निर्माण कंप्यूटर एडेड ड्रग डिजाइन के द्वारा किया जाता है। इस तकनीकि में कंप्यूटर बता देगा कि दवाओं का शरीर पर कितना असर होगा। प्रोफेसर रेड्डी ने कहा कि डाकिंग एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग हम यह अनुमान लगाने में कर सकते हैं कि कैसे एक अणु दूसरे अणु से जुड़ता है और एक पूर्ण संरचना बनाता है। इस तकनीक के माध्यम से हम जान सकते हैं कि दो अणुओं की आपस में बंधने की क्षमता कितनी है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के डाकिंग साफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग वह मुफ्त में आनलाइन तरीके से कर सकते हैं। वेबिनार में संस्कृति विवि और सांथिराम कालेज आफ फार्मेसी के सैंकड़ों विद्यार्थी भाग ले रहे थे। विद्यार्थियों ने वेबिनार में मुख्य वक्ता से सवाल कर अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया और तकनीक के बारे में पूर्ण ज्ञान हासिल किया। छात्रों और कर्मचारियों ने डॉकिंग द लीड फाइंडर के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाया और समृद्ध किया। प्रतिभागी को डॉकिंग का परिचय, केमस्केच–टू ड्रॉ स्ट्रक्चर्स, ओपन बेबेल– स्ट्रक्चर्स का इंटरकनवर्जन, बायोविया–विजुअलाइजेशन टूल, पाइआरएक्स–डॉकिंग प्लैट–फॉर्म, मैक्रोमोलेक्यूल की तैयारी, लिगैंड्स की तैयारी, डॉकिंग स्कोर, विजुअलाइजेशन के बारे में ज्ञान मिला। वेबिनार का आयोजन संस्कृति स्कूल आफ फार्मेसी की प्राचार्य प्रो. डा. वेंकटालक्ष्मी रंगनाथन की देखरेख में संपन्न हुआ।

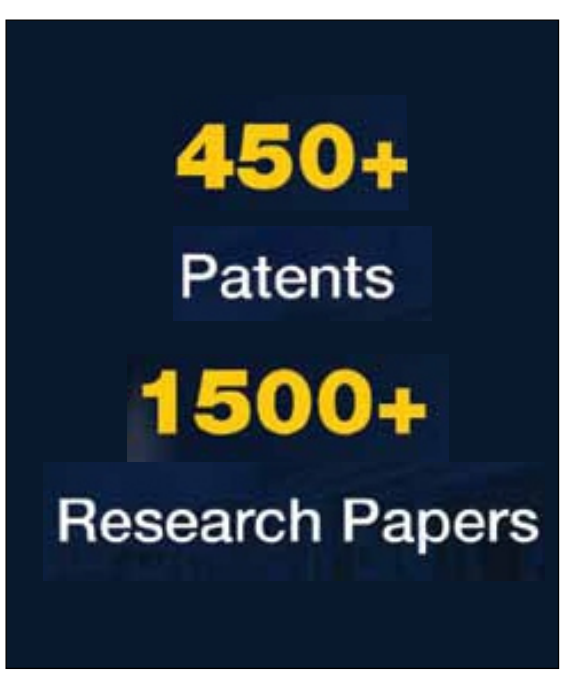

महर्षि चरक द्वारा रचित संहिता वैद्यक का अद्वितीय ग्रंथ

संस्कृति विवि में मनाई गई महर्षि चरक जयंती

संस्कृति विवि में आयोजित चरक जयंती के अवसर पर संबोधित करते संस्कृति आयुर्वेदिक कालेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डा. सुजित के दलाई। मंच पर मौजूद हैं विवि के कुलपति डा. तन्मय गोस्वामी।

मथुरा। संस्कृति आयुर्वेदिक कालेज एवं अस्पताल के शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा बड़े सम्मान और उत्साह के साथ जयंती मनाई गई। इस मौके पर संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति डा. तन्मय गोस्वामी ने महर्षि चरक के योगदान और आयुर्वेद में चरक सहिंता की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि चरक का रचा हुआ ग्रंथ चरक संहिता आज भी वैद्यक का अद्वितीय ग्रंथ है। आचार्य महर्षि चरक की गणना भारतीय औषधि विज्ञान के मूल प्रवर्तकों में होती है। संस्कृति आयुर्वेदिक कालेज के सभाकक्ष में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति डा. तन्मय ने कहा कि चरक एक महर्षि एवं आयुर्वेद विशारद के रूप में विख्यात हैं। वे कुषाण राज्य के राजवैद्य थे। इनके द्वारा रचित चरक संहिता एक प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ है। इसमें रोगनाशक एवं रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख है तथा सोना, चाँदी, लोहा, पारा आदि धातुओं के भस्म एवं उनके उपयोग का वर्णन मिलता है। आचार्य चरक ने आचार्य अग्निवेश के अग्निवेशतन्त्र में कुछ स्थान तथा अध्याय जोड़कर उसे नया रूप दिया जिसे आज चरक संहिता के नाम से जाना जाता है । चरक की शिक्षा तक्षशिला में हुई । इन्हें ईसा की प्रथम शताब्दी का बताते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि चरक कनिष्क के राजवैद्य थे परंतु कुछ लोग इन्हें बौद्ध काल से भी पहले का मानते हैं। आठवीं शताब्दी में इस ग्रंथ का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ और यह शास्त्र पश्चिमी देशों तक पहुंचा। संस्कृति आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डा. सुजित कुमार दलाई ने कहा कि चरक संहिता में व्याधियों के उपचार तो बताए ही गए हैं, प्रसंगवश स्थान–स्थान पर दर्शन और अर्थशास्त्र के विषयों की भी उल्लेख है। उन्होंने आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थों और उसके ज्ञान को इकट्ठा करके उसका संकलन किया । चरक ने भ्रमण करके चिकित्सकों के साथ बैठकें की, विचार एकत्र किए और सिद्धांतों को प्रतिपादित किया और उसे पढ़ाई लिखाई के योग्य बनाया । महर्षि चरक की जयंती पर आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ उनकी प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं माला पहनाकर हुआ। मंच पर आसीन अतिथियों का स्वागत असिस्टेंट प्रोफेसर डा. मीना ने किया। धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर सुधिष्ठा ने किया।

******

संस्कृति विवि के छात्रों को एसबीएल और एमकेडी कार्प में मिली नौकरी

होम्योपैथी दवाईयों की निर्माता कंपनी एसबीएल द्वारा आयोजित प्लेसमेंट प्रक्रिया में भाग लेने वाले संस्कृति विवि के विद्यार्थी और कंपनी के अधिकारी।

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का दो बड़ी कंपनियों एसबीएल और एमकेडी कार्प साइंस में प्लेसमेंट हुआ है। कंपनियों द्वारा ली गई परीक्षाओं और सक्षात्कार के बाद विद्यार्थियों को आफर लेटर प्रदान किए गए। विद्यार्थियों के चयन पर विवि प्रशासन के अधिकारियों ने बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। संस्कृति विवि के प्लेसमेंट सेल द्वारा दी गी जानकारी के अनुसार होम्योपैथी दवाइयां बनाने वाली विश्वविख्यात कंपनी एसबीएल ने चयन प्रक्रिया में सफल होने वाले संस्कृति स्कूल आफ फार्मेसी के बी. फार्मा के छात्र अमित कुमार तिवारी और अरविंद कुमार को अपनी कंपनी में अच्छे वेतनमान पर नौकरी दी है। कंपनी की ओर से आए एचआर विभाग के मोहित कुमार ने बताया कि कंपनी होम्योपैथी की दवाइयों के उत्पादन में बड़ा स्थान रखती है। उन्होंने बताया कि इस कड़ी चयन प्रक्रिया में संस्कृति विवि के विद्यार्थियों का प्रदर्शन बहुत उच्च कोटि का पाया गया और उन सभी में से कंपनी ने आवश्यकतानुसार दो विद्यार्थियों का चयन किया है। वहीं पेस्टीसाइड, फर्टिलाइजर के अलावा कई अन्य एग्रीकल्चर केमिकल निर्माता कंपनी एमकेडी कार्प साइंस कंपनी द्वारा संस्कृति विवि के बीएससी एग्रीकल्चर के 10 छात्रों को नौकरी दी गई है। कंपनी से आए सीनियर एचआर मैनेजर शाहिद खान ने बताया कि कंपनी द्वारा बड़े पैमाने पर पेस्टीसाइड और फर्टिलाइजर का उत्पादन किया जाता है। कंपनी अपने क्षेत्र में अपने उत्पादों की श्रेष्ठता के लिए जानी जाती है। उन्होंने बताया कि चयन प्रक्रिया के दौरान यह स्पष्ट हुआ है कि संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर द्वारा विद्यार्थियों को कृषि के क्षेत्र में आधुनिकतम और व्यवहारिक शिक्षा दी जा रही है। यही वजह है कि विद्यार्थी हर सवाल का जवाब देने में समर्थ हैं। उन्होंने बताया कि साक्षात्कार के बाद बीएससी एग्रीकल्चर के छात्र सुरज कुमार वर्मा, जावेद आलम, आकाश दीक्षित, धीरेंद्र सिंह, प्रिंस कुमार, सुधांशु रंजन, अंकित कुमार, अंकुश यादव, अतिया अनीस और श्वेता तिवारी को आफर लेटर दिए गए हैं। दोनों कंपनियों में चयनित विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कुलपति डा.तन्मय गोस्वामी ने कहा कि कंपनियों के साथ मेहनत करें और नवोन्मेश कर न केवल कंपनी को आगे बढ़ाएं वरन संस्कृति विश्वविद्यालय का भी नाम रौशन करें।

जन–जन को बताना है हर घर तिरंगा फहराना है

संस्कृति विवि ने वृंदावन में निकाली 'तिरंगा यात्रा'

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव अभियान के तहत छटीकरा से स्कान मंदिर वृंदावन तक 'तिरंगा यात्रा' निकालकर घर–घर तिरंगा फहराने का आह्वान किया गया। इस अनूठी और देशभक्ति से ओतप्रोत रैली में शामिल संस्कृति विवि के शिक्षकों और विद्यार्थियों, कर्मचारियों के गगनभेदी नारों से वृंदावन की पावन नगरी गूंज उठी। 'तिरंगा यात्रा' को संस्कृति विश्वविद्यालय के परिसर में संस्कृति स्कूल आफ एग्रीकल्चर के डीन डा.रजनीश त्यागी ने हरी झंडी देकर रवाना किया। इस मौके पर उनके साथ मौजूद संस्कृति आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डा. सुजित के. दलाई, विवि के रजिस्ट्रार पूरन सिंह, सब रजिस्ट्रार रविन्द्र नाथ त्रिवेदी, नर्सिंग कालेज प्राचार्य कमलकांत पाराशर, डा. विशाल, प्रशासनिक अधिकारी विवेक श्रीवास्तव आदि ने 'तिरंगा यात्रा' को जोरदार नारे लगाकर रवाना किया। विश्वविद्यालय परिसर से तिरंगा यात्रा में शामिल सभी बसों द्वारा छटीकरा तिराहे पहुंचे और यहां से 'तिरंगा यात्रा' पैदल स्कान मंदिर तक पहुंची। सैंकड़ों विद्यार्थी हाथ में तिरंगा लेकर 'वंदेमातरम', 'घर–घर तिरंगा फहराना है', का आह्वान करते हुए आगे बढ़ रहे थे। यात्रा में सबसे आगे संस्कृति विवि के एनसीसी के कैडेट हाथ में तिरंगा लेकर चल रहे थे। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भी अपने हाथों में तिरंगा ले रखा था। वृंदावन के लोग और रास्ते में कारों से गुजर रहे श्रद्धालु इस यात्रा को देख साथ में देशभक्ति के नारे लगाने से अपने को रोक नहीं पाए। मल्टी लेवल पार्किंग के पास 'तिरंगा यात्रा' में पुलिस प्रशासन के लोग भी जो तिरंगा यात्रा की सुरक्षा में चल रहे थे, वे भी देशभक्ति से ओतप्रोत होकर यात्रा में सहभागी बन गए। संस्कृति स्कूल के प्रशासनिक विभाग के सदस्य प्रद्युम्न शर्मा द्वारा गाए जा रहे देशभक्ति के गीतों ने सबको भावुक कर दिया। 'जन–जन को बताना है हर घर तिरंगा लहराना है', 'अपना कर्त्तव्य निभाएंगे भारत को विश्वगुरु बनाएंगे' के नारों ने स्कान मंदिर के आसपास ऐसी अलख जगाई कि आसपास के दुकानदार भी अपनी दुकानें के बाहर आकर इस नजारे को देख प्रफुल्लित हो उठे।

******

अच्छे विद्यार्थियों को तलाशती हैं नौकरियाः डा. वार्ष्णेय

संस्कृति विवि में आयुर्वेद की उपयोगिता पर 'संवाद'

संस्कृति विवि के सभागार में विद्यार्थियों को संबोधित करते मुख्य अतिथि आरोग्य भारती संस्था के राष्ट्रीय संगठन सचिव एवं आयुष मंत्रालय की सलाकार समिति की सदस्य डा. अशोक वार्ष्णेय।

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में 'वर्तमान परिवेश में आयुर्वेद की उपयोगिता व आयुर्वेद के छात्रों का भविष्य' विषय पर आयोजित एक महत्वपूर्ण 'संवाद' में आरोग्य भारती संस्था के राष्ट्रीय संगठन सचिव एवं आयुष मंत्रालय की सलाकार समिति की सदस्य डा. अशोक वार्ष्णेय ने आयुर्वेद के विद्यार्थियों से कहा कि पराभूत मानसिकता से बाहर निकलकर सकारात्मक सोच के साथ नवोन्मेष के आइडिया लेकर आगे बढ़ेंगे तो आपकी सफलता को कोई रोग नहीं पाएगा। डा. वार्ष्णेय ने कहा कि पूरे विश्व में आयुर्वेद को लेकर चर्चा और गंभीरता बढ़ी है। कोरोना काल के दौरान आयुर्वेद की उपयोगिता सिद्ध हुई है। पिछले दिनों हुई विश्वस्तरीय बैठक में जिसमें अनेक देशों के प्रतिनिधि मौजूद थे आयुर्वेद के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की स्थापना को लेकर बात हुई। उसके बाद ट्रेडीशनल मेडिकल सिस्टम की आधारशिला रखी गई। भारत में पहली बार अप्रैल में अहमदाबाद में आयुर्वेद ग्लोबल इन्वेस्टर समिट हुई। 30 देशों में आयुर्वेदा क्लस्टर के लिए एमओयू हुआ है। माडर्न मेडिकल सिस्टम के प्रति बहुत अधिक विश्वास का ट्रेंड बदल रहा है। पिछले आठ वर्षों के दौरान भारत में केंद्र सरकार आयुष के प्रति बहुत ज्यादा ध्यान दे रही है। केंद्र सरकार की प्रायर्टी लिस्ट में आयुष मंत्रालय आया है, बजट भी बहुत बढ़ा है। पहली बार ऐसा देखने में आ रहा है कि आयुर्वेद कालेजों की सीटें भर गई हैं बहुत से विद्यार्थियों को एडमीशन नहीं मिल पाया। आज आयुर्वेद की शिक्षा के लिए 750 मेडिकल कालेज हैं जबकि पहले 400 थे। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की शिक्षा ले रहे छात्रों को अपने को सौभाग्यशाली समझना चाहिए, मजबूर नहीं। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद के क्षेत्र में न तो नौकरियों की कमी है और न अपनी प्रैक्टिस के लिए मरीजों की कमी है जो आयुर्वेद पर विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि अच्छे विद्यार्थियों को नौकरियां ढूंढती हैं, उन्हें नौकरी नहीं ढूंढनी पड़ती। डा. वार्ष्णेय से पूर्व आरोग्य भारती के प्रांतीय संगठन सचिव डा. रमेश ने एक अच्छी दिनचर्या के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वस्थ रहने के लिए हमारी दिनचर्या ठीक होनी चाहिए। दिनचर्या तभी ठीक हो सकती है जब आप उसके लिए दृढ़ होंगे। उन्होंने कहा कि खान–पान का स्वास्थ्य पर बहुत असर पड़ता है, समय से खाना, समय से उठना, समय से सोना हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। संवाद में संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता ने विद्यार्थियों से मन लगाकर पढ़ाई करने और अपने अंदर सेवाभाव बनाए रखने का आह्वान किया। संस्कृति विवि के कुलपति डा. तन्मय गोस्वामी ने मुख्य अतिथि डा. वार्ष्णेय का परिचय देते हुए उनकी अनवरत जारी मानव सेवा के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्कृति आयुर्वेद कालेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डा. सुजित दलाई ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त करते आयुर्वेद चिकित्सा के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन संस्कृति आयुर्वेद कालेज की शिक्षिका डा. सपना ने किया।

संस्कृति विवि में विद्यार्थियों ने ली नशे से दूर रहने की शपथ

नशामुक्त भारत अभियान

संस्कृति विवि के कैंपस–टू में नशा मुक्ति अभियान के तहत शपथ लेते संस्कृति विवि के छात्र–छात्राएं।

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के कैंपस–टू में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के निर्देश और देश में चलाए जा रहे नशा मुक्त भारत अभियान के तहत विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से शपथ दिलाई गई। इस मौके पर विद्यार्थियों को नशीली दवाओं, पदार्थ के प्रयोग से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में व्यापक रूप से जनकारी दी गई। विद्यार्थियों से आह्वान किया गया कि वे स्वयं तो नशे से दूर रहें, साथ ही अन्य लोगों को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करें। संस्कृति स्कूल आफ साइकोलाजी की असिस्टेंट प्रोफेसर डा. उर्वशी शर्मा ने विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 1961 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अमेरिका में नशा मुक्ति अभियान चलाया गया था। नशा मुक्ति के लिए कई राष्ट्रों ने संधि कर इस अभियान को अपने देश में चलाने के लिए हस्ताक्षर किए। भारत ने इस संधि पर 1988 में हस्ताक्षर किए। सरकार द्वारा इस अभियान में जागरूकता सृजन कार्यक्रम, समुदाय की आउटरीच और दवा पर निर्भर आबादी की पहचान, उपचार सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित करने के साथ–साथ सेवा–प्रदाताओं के लिये क्षमता–निर्माण कार्यक्रम को शामिल किया गया है। संस्कृति आयुर्वेद कालेज एंड अस्पताल के प्राचार्य डा. सुजित के.दलाई द्वारा छात्र–छात्राओं को नशा मुक्ति अभियान के तहत शपथ दियाई गई। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और एक सुसंस्कृत जीवन जीने के लिए नशे से दूर रहना चाहिए। हमारे देश का उज्जल भविष्य युवाओं पर टिका होता है। अगर देश की युवा पीढ़ी ही गलत रास्ते में जाने लगे तो निश्चित ही उनका भविष्य अंधकार में चला जाता है।

छात्रों को उद्यमी बनाने के लिए मदद कर रही है सरकार

संस्कृति विवि में कौशल विकास पर हुई महत्वपूर्ण सेमिनार

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित स्किल डवलपमेंट सेमिनार में मुख्य अतिथि नेशनल स्माल इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन लि. के ब्रांच मैनेजर पुष्पेंद्र सूर्यवंशी ने बताया कि सरकार कौशल को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएं चला रही है। विद्यार्थियों को इन योजनाओं के बारे में जानकारी लेनी चाहिए और उसका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। संस्कृति विवि की ओर से आयोजित इस सेमिनार में विशेषकर संस्कृति आयुर्वेदिक कालेज के विद्यार्थी मौजूद थे। इन विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि दुनिया में तीन ही तरह की इंडस्ट्री होती हैं, मैन्युफेक्चरिंग, सर्विस और ट्रेडिंग। विद्यार्थियों को देखना है कि वे किस क्षेत्र में जाने की रुचि रखते हैं। एमएसएमई मंत्रालय से जुड़ा स्माल इंडस्ट्री कार्पोरेशन आपकी मदद के लिए हमेशा तैयार है। चाहे ट्रेनिंग हो या स्किल डवलपमेंट हर तरह का सहयोग एमएसएमई द्वारा दिया जा रहा है। उन्होंने उद्यमी को कैसा होना चाहिए और उसको सरकार द्वारा दी जा रही सहायताओं, सुविधाओं से किस तरह से जुड़े रहना चाहिए विस्तार से बताया। उन्होंने कहा वर्तमान दौर को देखते हुए आयुर्वेदिक चिकित्सा के क्षेत्र में विद्यार्थी कई तरह से अपना भविष्य बना सकते हैं। सेमिनार का प्रारंभ मुख्य अतिथि पुष्पेंद्र सूर्यवंशी द्वारा सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संस्कृति विवि के अकेडमिक डीन डा.योगेश् चंद्र ने मुख्य अतिथि के परिचय के साथ उन्हें स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। संस्कृति आयुर्वेद कालेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डा. दलाई ने विद्यार्थियों को इस महत्वपूर्ण सेमिनार से लाभ उठाकर अपने कैरियर को लाभप्रद बनाने के लिए प्रेरित किया। सेमिनार के समन्वयक विंसेंट बालू ने आगंतुकों के प्रति आभार एवं धन्यवाद प्रस्तुत किया।

संस्कृति विवि में छात्रों को दिया गया वेब डिजाइनिंग प्रशिक्षण

समर ट्रेनिंग प्रोग्राम

संस्कृति विवि में आयोजित वेब डिजाइनिंग के प्रशिक्षण शिविर में विद्यार्थियों को संबोधित करते एमएसएमई आगरा से प्रोसेस एंड प्रोडक्ट डवलपमेंट सेंटर (पीपीडीसी) के प्रशिक्षक अंकित पाराशर।

मथुरा। संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग और ट्रेनिंग विभाग द्वारा संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों को लेकर समर ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है। विवि के विद्यार्थियों के लिए शुरू हुए इस बहुउद्देश्यीय कार्यक्रम के तहत वेब डिजाइनिंग ट्रेनिंग का शुभारंभ करते हुए एमएसएमई आगरा से आए प्रोसेस एंड प्रोडक्ट डवलपमेंट सेंटर (पीपीडीसी) के प्रशिक्षक ने कहा कि आज के समय विद्यार्थियों के लिए तकनीकियों का अतिरिक्त ज्ञान उनके कैरियर को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान देता है। वेब डिजाइनिंग के इस ट्रेनिंग प्रोग्राम के अंतर्गत संस्कृति विवि के बी.टेक, बीसीए, एमसीए डिप्लोमा, बीबीए और एमबीए के लगभग डेढ़ सौ छात्रों ने एमएसएमई के ट्रेनर अंकित पाराशर से वेब डिजाइनिंग के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण हासिल किया। ट्रेनिंग का यह प्रोग्राम 15 दिनों तक चला। प्रशिक्षक अंकित पाराशर ने विद्यार्थियों को बताया कि एक कंपनी की वेबसाइट बनाते समय किस तरह से प्रोफेशनल नजरिया काम आता है। उन्होंने बताया कि वेब पेज डिजाइन करने की एक प्रक्रिया होती है जिसमें बहुत सारे टेक्निकल टर्म्स का प्रयोग होता है, इसी को वेब डिजाइनिंग कहते हैं। किसी भी कंपनी के लिए उसका वेब पेज बहुत महत्वपूर्ण होता जिसपर कि कंपनी की सभी जानकारी होती हैं। किसी भी वेबसाइट या वेब पेज को हाइपर टेक्स मार्कअप लैग्वेज की सहायता से बनाया जाता जिसे एचटीएमएल कहते हैं। यह एक कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा होती है जिसका स्ट्रक्चर कोडिंग के रूप में होता है। वेब डिजाइन करने के लिए एचटीएमएल लैंग्वेज का प्रयोग कर एक खूबसूरत वेबसाइट डिजाइन करते हैं। प्रशिक्षण के इन 15 दिनों के दौरान विद्यार्थियों ने पूरी रुचि लेकर वेब डिजाइनिंग सीखी और अतिरिक्त ज्ञान की उपलब्धि पर संतोष व्यक्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में संस्कृति विवि के ट्रेनिंग सेल की मैनेजर अनुजा गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर सगारिका गोस्वामी, असिस्टेंट प्रोफेसर शिखा पाराशर का विशेष योगदान रहा।

******

हर इंडस्ट्री की जरूरत बन चुकी है डिजिटल मार्केटिंग

संस्कृति विवि में शुरू हुए समर ट्रेनिंग प्रोग्राम

संस्कृति विवि में आयोजित डिजिटल मार्केटिंग के प्रशिक्षण शिविर में विद्यार्थियों को संबोधित करते एमएसएमई आगरा से आए असिस्टेंट डाइरेक्टर प्रोसेस एंड प्रोडक्ट डवलपमेंट सेंटर (पीपीडीसी) एम गणेश।

मथुरा। संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग और ट्रेनिंग विभाग द्वारा संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों को लेकर समर ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है। विवि के विद्यार्थियों के लिए शुरू हुए इस बहुउद्देश्यीय कार्यक्रम के तहत डिजिटल मार्केटिंग ट्रेनिंग का शुभारंभ करते हुए एमएसएमई आगरा से आए असिस्टेंट डाइरेक्टर प्रोसेस एंड प्रोडक्ट डवलपमेंट सेंटर (पीपीडीसी) एम गणेश ने कहा कि आज के समय डिजिटल मार्केटिंग ने हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान ले लिया है, इसलिए विद्यार्थियों को इसकी बारीकी से अवगत होना आवश्यक हो गया है। ट्रेनिंग प्रोग्राम में मौजूद सौ से अधिक विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता एम गणेश ने कहा कि वर्तमान दौर में आनलाइन व्यापार हो रहा है। किसी भी प्रोडक्ट की मार्केटिंग बड़े स्तर पर करने के लिए डिजिटल नेटवर्किंग का सहारा लेना ही पड़ता है। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि कैसे मार्केटिंग के लिए डिजिटल नेटवर्किंग का बेहतर प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों को विस्तार से यह भी बताया कि किन प्लेटफार्म पर डिजिटल मार्केटिंग करना आसान और लाभदायक साबित हो सकता है, इसके लिए क्या करना चाहिए इसकी भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लगभग सभी इंडस्ट्री के लिए डिजिटल मार्केटिंग आवश्यकता बन गई है। इसकी वजह यह भी है कि बड़े उपभोक्ता अब गूगल जैसे सर्च इंजन से तलाश कर अपने लिए उत्पाद खोज रहे हैं। इसके माध्यम से ही वे कंपेयर भी कर रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वक्ता एम गणेश द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कार्यक्रम की समन्वयक संस्कृति ट्रेनिंग सेल की अनुजा गुप्ता ने बताया कि इस प्रशिक्षण का विद्यार्थियों को कंपनियों में प्लेसमेंट के दौरान बड़ा लाभ हासिल होगा। इस तरह के प्रशिक्षण उनकी शैक्षणिक योग्यता में इजाफा और ज्ञान की वृद्धि करेंगे।

******